



“घौर मेरी शीघ रात हवाई झण्डा द्वारा
नीच, बेश के कोने-कोने के पत्तों में बघेर ही जाए
—उम सेतों में, जहाँ हमारा कर्मशील किसान
अपना लून-पसीना एक करता है घोर अनाज
उगाता है—ताकि मेरी राख भी उन्हीं सेतों
की मिट्टी में मिल जाए, इसी मिट्टी का अंग
बन जाए।”

—मेहर



नेहरू ने कहा

डा० केवल धीर

संपादक
डा० केवल धीर

NEHRU NE KAHIA : SAYINGS & MEMOIRS
Dr KEWAL DHIR
मूल्य एक रुपया

क्रम

युग-पुण्य नेहरू

७-

व्यक्ति के रूप में-जनसाधारण के बीच-भारत
हूय है-विचारक एवं दार्शनिक के रूप में-जय
का देवता

मेरी बसीफ्त

२९-

सुक्तिपा

११-

अंतिम कसौटी-अबसर की समानता-आत्मनिर्म
रता-आत्मा-मादमी का व्यक्तित्व-भारत हूय
है-आत्मा एवं विश्वास-महाम्य के प्रति आकर्षित
महीं-उच्च-एक-विश्व की स्थापना-कर्म-कलाकार
का उत्तरदायित्व-सुत्रता-जीवन-मीमांसा-उत्सव
भारत-रमाण-राम का महाम्य-देश से प्यार-
धर्म-नवयुग की ओर-परमात्मा-परलोक का
विचार-महाम्य के पूर-पारमात्म सम्यता-
प्रकाश बना गया-अकृति-सौंदर्य-प्रेम-बेहिमानी-
भारत एशिया की तस्वीर-भारत की भाषा-
भारत की युधिष्ठा-भाषना-माकर्मभार-भूत-मैं
क्या हूँ-पैची भाव-राजनीतिज्ञ-राष्ट्र भ्रमर है-
राष्ट्र का व्यक्तित्व-राष्ट्रभार-सोफ्टवयर का जय-
विज्ञान-विद्यमान-विद्यमानि-व्यक्ति एवं राष्ट्र

का जीवन-शासन द्वारा अधिकारों का परित्याग-
सम्प्रदायवाद-समुक्त राष्ट्रवाद-संस्कृत भाषा-
संस्कृति और सम्पत्ता-सच्चा नागरिक-सत्य-
समाजवाद-साम्यवाद-स्वतंत्रता-हिन्दी-हिंसा

संस्मरण

८१-१०३

जुते साफ करल का दण्ड-खर की नीमत एक
हजार रुपये प्रति गज-बकर पुर हो गया है-मुझे
नहीं-फिस्तानी की भलाई के लिए-क्या मेरे हाथ
नहीं हैं ?-यह तो मैं जूम ही गया था-उठ जर
जायते रहे-मैं क्या खूटी हूँ ?-कानून ईसा के लिए
है ईसा के कानून के लिए नहीं ।-गुमने हमें क्या
दिया ?-यातियों के बदल दिया-बिघालकर
मता-बड़े छोट करनेवाले आए ।-दुप पटागन
पी गण-पांच रुपये के गुम्बारे-बंमसी भैया-बहुते
आप !-बसारे के पांच रुपये !-हिन्दी का अधिकार-
राष्ट्रवाद के छरबूज-बद आप बच्च दे-हमें भी
बुम्मा दो-एक और अनिक-माखीय मापी-
विशों के बीच

परिमिष्ट

१०४-११२



युग-पुरुष नेहरू

(परिचय)

एक युग या जी नेहरूजी के नाम से प्रारम्भ हुआ या और सत्ताईस मई, १९६४ को समाप्त हो गया जब काश के निर्वय हापों ने हमसे हमारा प्रिय जवाहर छीन लिया। जवाहरलाल नेहरू युग-पुरुष थे। उन्होंने ही इस युग का निर्माण किया—इतिहास की धारा को मोड़ दिया और जाते-जाते वे इस युग के इतिहास पर अपने अमिट हस्ताक्षर छोड़ गए।

१११

जी नेहरू भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के बीर सेनानी एवं स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम प्रधानमंत्री ही न थे बल्कि वे थे भारत की आत्मा नये भारत के निर्माता विश्व के महान राजनीतिज्ञ एशिया एवं अफ्रीका के सबसे बड़े नेता विश्व के नव जन-जन के मुक्तिदाता सारी मानवजाति के उन्मायक एक कर्मठ व्यक्ति एक महान भविष्य-द्रष्टा विचारक—बीर बिस्व की शांति का संदेश देनेवाले अमन के बैरता ! वे ससार के सभी लोगों के अपने एवं प्रिय थे—या घामद वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें सब्यों की परिधि में बांधा नहीं जा सकता।

नेहरूजी के समुचे जीवन पर एक सामान्य दृष्टि आसने से ही पता चलता है कि वे भारत एवं विश्व के लिए पैदा हुए थे और हूँ

नई रोसनी नये तन्त्रित प्रधान कर हमसे बिबा से नए ।

नेहरूजी का जन्म एक अत्यन्त सम्पन्न एवं बनी परिवार में हुआ । जीवन की शुरुआत उन्होंने किसी 'राजकुमार' की शक्ति की बिबेसों में उनकी पिता-बीबा हुई और स्वदेश भीड़ते ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की छत्रछाया में जीवन की सुख-सुविधाओं की परवाह न करते हुए देश की आजादी की सड़ाई में कूब गए । अपने जीवन के कितने ही बहुमूल्य वर्ष उन्होंने जेल में व्यतीत कर दिए । इसी बीच पूर्य माता का स्वयंबात हुआ पत्नी राय रोप का बिबार हो बत बनी पिता स्वयं बिबार गए—किन्तु उनके उप त्याग और बनिबान में कोई कमी नहीं आई । पिता की मोठीलाय नेहरू की युलु के परबात उन्हें भीषण आबिद कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । घर का पुराना मामान और पत्नी के आश्रुपय तक भी बेचने पड़े । किन्तु उनकी देश शक्ति में कोई बन्तर नहीं आया । बन-नेताओं ने बिस स्वतंत्रता के बिबार को भारतीय जनता में बंधुरित किया बा राष्ट्र पिता महात्मा गांधीजी के मन्त्रक से नेहरूजी ने स्वातंत्र्य-मन्त्राओं द्वारा उसीको गीबा तथा आतुभूमि की बपनगीन करने के लिए बनिबान के माय का आश्रान किया । उन्होंने सबसे ब्याय रूकर सब तरह क नकटों की बीछारों को बान निगान बसाबस पर नहा

और फिर उन्होंने हमें प्रशासक की भूमि पर लाकर छा कर िबा तथा परतंत्रता का सबाश उठाए देन का स्वतंत्रता के भुंदारित किया तथा हमारे सब प्रयोज के लिए ब स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम प्रधान मंत्री बने । मान्य को स्वतंत्रता बिभी की बबाल परलु आबिद लय सामाबिद दुल्लि है अभी हम पराबीन स । उन्होंने सबजतीय बाबताबा हाग देन को बबनिर्माण के सब पर बबनर बिबा, ताकि हम आबिद लय सामाबिद हाबभम्बन प्राप्त हा । उन्होंने हमें 'आराम हागम' का नाग दिया ताकि हम देश

को उन्नत एवं विकसित बना सकें। देश की जनता में उन्होंने राष्ट्रीय जागरण की भावना उत्पन्न की तथा इसे समुक्त रूप दिया—साथ ही अपने देश से परे युद्धग्रस्त संसार का सह-अस्तित्व और पंचशील की रोशनी देकर मानवीयता, शांति और उन्नति का रास्ता दिखाया। उन्होंने बतलाया कि विश्व का कल्याण बलों की विभीषिका से नहीं हो सकता बल्कि इसके लिए शांति एक साहचर्य की आवश्यकता है। विश्व की बड़ी शक्तियाँ जिन्हें अपनी भीषण शक्ति पर यश था और जो सदैव युद्ध का राग अनापत्ती की नहक़्की द्वारा बिखराए गए साहचर्य और शांति के मार्ग को अपनाते क लिए बाध्य हो गईं। अपन इन्हीं सिद्धांतों के बस पर विश्व-राजनीति के रंगमंच पर उन्होंने भारत को स्पष्ट स्थान दिखाया। विश्व के किसी भी छोटे-बड़े राष्ट्र में कोई भी घटना घटती तो सबकी दृष्टि नहक़्की की ओर मग जाती—संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी उत्सुक रहते कि नहक़्की क्या कहते हैं।

भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक लगातार ३५ वर्ष तक नहक़्की भारत ही नहीं बल्कि विश्व मंच पर चमकते रहे—मिलन रूपों में उनके कुछ विशिष्ट रूपों की नज़रों में प्रस्तुत है।

व्यक्ति के रूप में

एक युवा राजनीतिज्ञ होने के अतिरिक्त श्री नेहरू एक महान व्यक्तित्व के स्वामी भी थे—“एक व्यक्ति के रूप में नेहरू की सर्वप्रधान विशेषता उनकी निरुद्ध मानवीयता है। बिचार, भावना इच्छा और सबबना तथा उनकी अभिव्यक्ति और संतुष्टि हर दृष्टि से वे विस्तृत मानवीय हैं। उनमें मनुष्य-भाव की अभिजातता और भावनाओं की गहरी समझ तथा उनके प्रति अपरि-

मिठ सहाजुमुठि है। ये मनुष्य को प्रकृति से पापमुक्त और निष्कर्मक मानते हैं तथा मानवीय जीवन को उसके समस्त सुख-दुःख सहित पूर्णतया ब्राह्म और भोग्य घोषित करते हैं।" किन्तु सुन्दर दार्शनियों में भी बलरामकुमार बट्टोपाध्याय ने गैहकजी का व्यक्ति-विषय भीचा है। यह नाथ है कि मनुष्य के बारे में गैहकजी की ज़रूर विचारपाठ इसी आधारभूत चेतना और समझ का परिणाम है तथा उनके निजी जीवन में भी इसी स्वाभाविकता और प्यार का समावेश रहा है। वे स्वयं कहते हैं,

"मैंने जीवन से प्यार किया है और यह आज भी मुझे काँटवित करता है और अपने हँस से मैं उसकी अनुभूति का प्रयास करता हूँ। यद्यपि कई बदलते बाबाएँ मेरे चारों ओर लड़ी हो गई हैं, लेकिन जोने की यह समझाया मुझे बाध्य करती है कि मैं जीवन से हटूँ उसके किनारों से झटककर दूँ, कभी उनका दास बनकर न रहूँ।"

अपने स्वास्थ्य के विषय में सदैव वे बहुत सतर्क एवं सावधान रहते थे तथा नियमित रूप से व्यायाम करते थे। व्यायाम की यह आदत उन्हें अपने पिता मोतीराम नेहरू से मिली। पोबासन उनका प्रिय व्यायाम था। वे एक कुछल पिताजी की बेटी का फिजिट ट्रेनिंग वालीवाल बीचमिशन सिखाती बुद्धिवादी एवं बीड़ में उनकी विशेष रुचि रही। कैम्ब्रिज में उन्हें बीड़ में एक बार पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। वे बार्डमिशन से लेकर बामुबान तक खेला जाता आते थे।

हजिमत में उन्हें बिड़ भी। वे अत्यधिक उदार हृदय के व्यक्ति थे। गैहकजी यदि कभी कोई बलत बात किसीको कह देते तो बुद्ध का अनुभव होते ही उनके सामायाचना कर लेते तथा इस से वे किसी प्रकार की लज्जा अनुभव न करत। उनमें नैतिक मान्यनिष्ठता का विद्यालय सम्भार था। उनका स्वभाव बहुत विनम्र

था। इतने बड़े व्यक्ति होने पर भी वे अपने-आप को हमारी और आपकी तरह साधारण व्यक्ति ही समझते थे। उनके निजी आचरण में स्वामाबिक्ता एवं सादगी थी तथा भीतर एवं बाहर से वे एक थे। उनका बात करने का ढंग हमेशा ही एक-सा रहता था चाहे वे किसी एक व्यक्ति से बातें कर रहे हों अथवा लाखों व्यक्तियों से। मोहन के सम्बन्ध में भी उनकी कोई विशेष रुचि नहीं थी बल्कि वहाँ भी वे होते वहाँ वैसा ही मोहन या भेटे। उन्हें जीवन के किसी भी पक्ष में तत्कालीन की आवश्यकता नहीं थी। उनकी निजी आवश्यकताएं इतनी सरस और सादा थीं कि दूसरों पर निर्भर रहने की उन्हें जरूरत ही महसूस नहीं होती थी। प्रधान मंत्री के रूप में इतने बड़े पद पर होते हुए भी वे अत्यन्त सहज भाव से जीवन यापन करते थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी आधिक्य पक्ष को विशेष महत्त्व नहीं दिया। आज भी यदि देखा जाए, तो वे कोई विशेष सम्पत्ति नहीं छोड़ गए।

यद्यपि अपने जीवन के अधिकांश समय में वे छात्री के वस्त्र ही धारण करते रहे किन्तु पहचान के विषय में वे सर्वत्र सतक रहते थे तथा बड़िया वस्त्रों के साथ-साथ बड़िया सिलाई चाहते थे। बिदेसों में वे प्रायः अपने राष्ट्रीय पहरावे—छात्री की अचकन पम्प-जामे में ही रीज पहते थे। उनके पहरावे में भी राष्ट्रीयता थी।

मेहक परिश्रम एवं कर्म को मुख्य मानते थे। भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के समय से लेकर अपने जीवन के अंतिम दिनों तक उन्होंने इतना परिश्रम किया है कि दूसरी इसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। स्वातंत्र्य आंदोलन के दिनों में और इसके बाद भी वे एक-एक दिन में सौ-सौ भाषण करते रहे थे। यह मात्र उन्हींके बस की बात थी और इतना परिश्रम करने के बावजूद उन्हें पकान का अनुभव न हुआ था। प्रधान मंत्री के रूप में अपने अंतिम

विश्वों को छोड़कर (बस कि उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था) प्रायः वे प्रातः सात बजे से लेकर रात्रि के एक बजे तक काम में व्यस्त रहते थे। प्रतिदिन अठारह-उत्तीस बंटे काम करना कोई साधारण बात नहीं है। अक्सर उन्हें कहा जाता कि आपको विधाम भी करना चाहिए, तो वे इस बात को हँसकर टास जाते। वे विधाम को अनिवार्य नहीं समझते थे। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण वेष्ट को अर्पण कर दिया था तथा अपनी इसी भावना को आधार माना है कि नारे के रूप में जनता के सामने व्यक्त किया था। वे कहा करते थे कि काम जैसे ही सरल हो या कठिन इसका समझ पर होना अनिवार्य है। उनकी काम करने के विषय में अपनी एक विशेष बात थी। और वे जहाँ तक सम्भव हो प्रत्येक कार्य को अपने-आप संभाल अपनी बेच-रेग में ही करना पसंद करते थे। इसमें जहाँ उन्हें मानसिक रूप से तृप्ति का अनुभव होना था वहाँ वे प्रसन्नता भी अनुभव करते थे। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उन्हें किसी बग्य व्यक्ति पर विरहान नहीं होता था बल्कि आत्म विरहान एवं कर्मशीलता के प्रतिक्रियास्वरूप ही वे ऐसा करत थे।

अपने जीवन में वे सर्वत्र अधिष्ठ से अधिष्ठ व्यस्त रहे। जहाँ देश की आंतरिक परिस्थितियों एवं समस्याओं के विषय में वे सोचने और उनका समाधान करने में बस विरहो (अंतर्यष्टीय) विश्वों पर भी अपना ही विचार करने। भारत एक नवोद्भूत स्वतंत्र राष्ट्र ही नहीं है बल्कि निबंन एक अल्पविकसित भी है। ऐसे राष्ट्र की समस्याओं की विलक्षणता का अनुमान गहन ही लगाया जा सकता है—धीरे दमर विरह की प्रत्येक परिस्थिति पर गहर रचना आती जान हम हमें कहना कि संसार पर जो बहु नाम्य हो उन सभी बातों का ध्यान रखना बेहद महत्वपूर्ण ही सीमित था। इस परिस्थिति उन्होंने विभिन्न ही समस्याओं का बोध

अपने कंधों पर उठा रखा था। अनेक कार्यक्रमों आयोजनों एवं समारोहों में वे अधिक से अधिक समय देते थे तथा हममें विशेष रुचि लेते थे। जैसा कि पहले उल्लेख किया था चुका है, दूसरों पर निर्भर रहने की आवश्यकता उनमें नहीं थी। अपनी 'आत्मकथा' में एक स्थान पर स्वयं लिखते हैं

‘किन्ती भी महत्त्वपूर्ण विषय में किसीपर निर्भर रहना सम्भव नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा एकाकी करनी है, दूसरों पर निर्भर रहना निराशा को आमंत्रित करना है।

नेहरू कभी बेकार नहीं बैठ सकते थे। अपने निवास-स्थान पर जबवा कार्यालय में यदि उन्हें कोई काम करने को न होता तो वे सद्याल में प्लानों की क्यारियां ठीक करने लगते। भाभी को हिदायतें देते जबवा अपनी मायबही में पहुंचकर पुस्तकें ही देखने लगते। उन्हें प्रत्येक समय प्रत्येक बात का ध्यान रहता था। दो-चार दिनों के लिए जब कभी वे विद्याम के उद्देश्य से कहीं जाते भी तो वहां के वातावरण में अपने-आप को व्यस्त कर लेते तथा निम्न विषयों पर सुझाव देते रहते। सरकारी फाइलों का देखना तो विद्याम के दिनों में भी उनका नियम ही था। वे जिस किसी कार्य में भी व्यस्त होते उसमें तत्पनीन हो जाते। इस समय किसी प्रकार का हस्तक्षेप उन्हें असह्य होता।

नेहरूजी की स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र थी। अनेकों अत्यंत साधारण घटनाएं भी प्रायः उन्हें याद रहती थीं। यह विशेषता उनके मानसिक गठन एवं विद्यात्मता के लक्षण हैं। वे भारत के ही नहीं समस्त विश्व के प्रिय थे और इस बुद्धिकोष से सारा सत्कार ही उनका मित्र था किन्तु उनके विशेष एवं निजी मित्रों में नाईं मार्गटबेटन परिवार उल्लेखनीय है। वे जब कभी भी इंग्लैण्ड जाते तो इसी परिवार के साथ ठहरते। इसी प्रकार जब

कभी यह परिवार भारत आता तो मेहल्जी के विशेष प्रतिबिंब के रूप में उन्हींके बहो ठहरता ।

मेहल्जी अत्यंत मायुक्त व्यक्ति भी थे । किसी भी बात का असर उनपर बहुत अधिक होता था । यदि कोई वस्तु काम करता तो वे कोपित हो बैठते । यदि वे किसी निस्सहाय व्यक्ति को देखते तो उनकी सहायता का भरसक प्रयत्न करते । उन्हें ऐसे विषयों में कभी अपने बह्मण्य का अहसास नहीं रहता था । बच्चों के प्रति अत्यधिक स्नेह एवं प्रेम भी उनकी मायुक्त प्रकृति का लक्षण था ।

जनसाधारण के बीच

श्री मेहल् में इतिमत्ता का पूर्ण अभाव रहा है तथा जनसाधारण के बीच रहकर वे अत्यंत प्रसन्न एवं प्रसृतित हो पड़ते थे । उन्हें इस बात की परवाह नहीं रहती थी कि वे देश के प्रधान मंत्री हैं—एक बहुत बड़े नेता हैं अथवा जनता के बीच वे अपने-आप का भी एक साधारण व्यक्ति ही अनुभव करने लगते थे ।

“याने कुछ पर उनसे मोरे रंग और तीन उमरे नाक-नका के कारण लच्छन केहू मब भी पर्याप्त आकृष्ट । फिर पर बने मुझे दर्द-ने मयद भीने बानों से चिरी सुपात खिचा—जबना क बीच बरब बने मय मे इन्दरी की हुई के-राय मकद बाँधे गरी से बरी छेनेबानी लच्छन गरी की मचरम वा कुर्मा-मन्गी ‘काज में छीक दिन के ऊपर हुबपा एक छोटा-सा मुख ममाब—किसी जमान पड़ानु महिमा के निष्पत्तक ग्यार का बरबल म्बुनिर्बल नीचे मर’ बूरीरार पायदामा और पाव से घपड़ी बूट या बाबुनी चपम माय हाथ या बगल में एक छोटी-नी बरनी छड़ी और होत्र पर मुड मुन्नान—म आकार क यह प्रतिपदिभन

राम-नायक प्रायः ही तेज-तेज कहम उठाते अथवा सुनी मोटर में बैठे अपार जनसमूह के अवयवकारों का हाथ जोड़-जोड़कर जमाव होते हुए मिमटों में निकल जाते हैं । " यह था भी नेहरू का सामाजिक रूप जिसका विषय किसी पत्रकार ने कितने सुन्दर शब्दों में किया है । कितना प्यारा—कितना आकर्षक था यह रूप ! नेहरूजी का यह रूप जब और भी निखर उठता था जब वे जनता के करीब बिम्बुम करीब किसी सार्वजनिक सभा के मञ्च पर होते थे । वे भाषण आरम्भ करते थे तो बिना किसी प्रकार की भूमिका के बातें करते थे तो अत्यन्त सहज-सुरल भाव से जनसामान्य से यों सम्बोधित होते थे जैसे कोई अध्यापक बच्चों को कोई सीधी सी बात समझा रहा है । वे साधारण-सी बात भी बतलाते तो इसके सभी पहलुओं पर सविस्तार प्रकाश डालते, ताकि किसीको यह शिकायत न हो कि उनकी बात समझ में नहीं आई । उनके बात करने का रंग हल्ला प्यारा होता कि सगला पूरा खड़ा रहे, हृदय में प्यार के अग्नित छोटे पूर पड़े हैं ।

बाँवों में जाना उन्हें बहुत प्रिय था तथा घामीय जनता उन्हें बेवतास्वरूप पूज्य मानती थी । कुछ स्त्रियाँ तक उनके चरण स्पर्श करने को उद्यत रहती थीं । प्रत्येक व्यक्ति का प्रेम उन्हें उपसन्न था ।

भारत में ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो नीति के आधार पर नेहरूजी का विरोध करते थे उनकी कड़ी से कड़ी आलोचना करते थे किन्तु उन्हें भी 'जवाहरलाल' से प्यार था । इस बात की स्वीका रोक्ति वे भिन्न सभ्यों में करते थे—जनता पर नेहरू का आदर है, लोग उनका नाम मुमते ही आधार से अपना सिर मत कर देते हैं आदि ।

भी नेहरू ने सदैव अपने-आप को पूर्ण रूप से समुचे भारत का

माती कहा है न कि किसी एक विशेष प्रदेश का। यही कारण है कि समस्त देश की जनता उन्हें 'अपना' समझती रही है। करमीर से कल्याणपुरी तक प्रत्येक स्थान पर वे गए हैं। प्रत्येक स्थान की जनता के बीच उन्होंने अपने महान व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है तथा भारत के प्रत्येक नागरिक के मानस पर यह प्रभाव बरपन किया है कि वे भारत के हैं—सभीके 'अपने' हैं। किसी विशेष स्थान अथवा प्रांत से उनका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है तथा भारतीय जनता के बीच एवं उनके साथ उन्होंने एकात्मकता स्थापित की है। बातचीत मेहक के व्यक्तित्व रूप तक ही नहीं रही प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय जनता ने भी उन्हें विस्तृत हठी रूप में ग्रहण किया है।

हम यदि अपने देश भारत की बात न करते हुए विश्व के अन्य सभी देशों की बात करें तो भी इसी निष्पक्ष पर पहुँचें कि हर देश में हर स्थान पर जनता ने उन्हें हार्दिक स्नेह दिया है और उनमें अपनात्व अनुभव किया है। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में तो उन्होंने एक ऐसे 'मेहक' का निर्माण कर दिया था जो किसी एक प्रांत देश या एशिया का नहीं बल्कि समग्र विश्व की जनता का 'प्रिय' बन गया था।

भाराम हराम है

मेहकजी ने देश की जनता को एक नया मार्ग दिया था— 'भाराम हराम'। तथा उनका मत था कि मनुष्य को कर्मशील एवं परिश्रमी होना चाहिए।

एक 'कर्मशील व्यक्ति' के रूप में भी मेहक का विशेषण इन प्रकार किया जा सकता है कि वे उसी विचारों को अपने मानस में स्थापन देते थे जो व्यावहारिक हों या जिन्हें कर्मशीलता द्वारा व्याप

हारिक रूप दिया जा सके। उनका कथन है कि "ससार में सबसे सुखी व्यक्ति वही है जिसके विचार और कर्म में पारस्परिक सार्जनस्म हो। सामन्त की सोच ही कर्म का मार्ग है, और जो प्रबुद्ध व्यक्ति उस मार्ग का अनुसरण करता है वही सुख प्राप्ति की यात्रा कर सकता है।"

मेहताजी को कर्म पुरुषार्थ और निरन्तर अध्ययन की प्रवृत्ति अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। यदि मेहता-परिवार पर हम दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि सारा मेहता-परिवार ही कर्म का धनी रहा है। 'आत्मकथा' में उन्होंने लिखा है, "दस वर्ष की अवस्था में 'आत्म नवन' के निर्माण के समय मैं मजदूरों को जबाह परिधम करते देख आत्यधिक प्रभावित हुआ था।

वासपन को पार कर जब वे मुंबाई में प्रविष्ट हुए तो आस पास की परिस्थितियों से उनके मन में देश के लिए धन्य सत्ता की कल्पना ने जन्म लिया। वे यूरोपियन उदारतावाद एवं क्रैबिजन समाजवाद से लेकर सोक्रेतास तिलक के प्रायः हिंसात्मक उग्रतावाध तक कई तरह की विचारधाराओं से प्रभावित हुए, किन्तु उनकी कमचीसता बनी तक कास्मनिक ही थी। तीस वर्ष की आयु के बाद महात्मा गांधी के सम्पर्क ने उन्हें नयी दिशा दिखाई तथा वे एक समनित और सक्रिय सरताग्रही बन गए। एक विचारक एवं कर्ममानी के नाने गांधीजी की निर्भीकता ने मेहता को आत्यधिक प्रभावित किया था। वे पहले ही परिधमप्रिय, साहसिक एवं महत्वाकांक्षी युवक थे किन्तु गांधीजी के सम्पर्क ने उनके गुणों को और भी विकसित कर दिया। उन्होंने ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का त्याग कर देश के स्वातन्त्र्य आंदोलन में पशार्पण किया। गांधीजी कहा करते थे कि, "जबाहर साम मेहता कांग्रेस के एक सर्वाधिक कर्मठ एवं परिधममचीस कार्यकर्ता हैं।" उन म्निा वे इतने परिधमी तथा कमचीस युवक थे

कि कांग्रेस के महत्वपूर्ण अभियान उन अकेले की सक्रियता पर निर्भर करते थे। एक पत्रकार ने मेहताजी के विषय में कहा। "वे कितनी ही बार एक ही समय में कांग्रेस के मुख्यालय प्रमोद रणधेन-सेनानायक प्रतिनिधि प्रवक्ता और पंचत सिपाही थे। उनके लिए आराम से बैठ पाना असम्भव-सी बात थी।

मेहताजी की एक दूसरी विशेषता यह थी कि वे कभी मयनी नहीं होते थे तथा सतरे में कूद जाने को उत्सुक रहते थे। वे स्व कहते हैं

"मोम बहुधा कर्म से बचते हैं क्योंकि उन्हें परिणामों में मग्न होता है और कर्म का अर्थ है जोखिम और खतरा। बिना दूर ने भयंकर लगती है लेकिन यदि आप उसे निकट से देखें तो वह इतनी अभिप्राय नहीं रहती। और बहुधा वह एक आनंदमय और सहज सिद्ध होती है जीवन के उत्साह और उत्साह को बढ़ानेवाली।

हर विषय परिस्थिति को मेहताजी ने अपीकार किया है विषय के समय बटकर वे खड़े हुए, हर पक्ष बात का उन्होंने निर्णयना से विरोध किया। अत्यंत कार्य की पूर्ति उन्होंने सक्रिय रूप से की अपने आदर्शों के लिए वे सर्वसंघर्षशील रहे और जनता का राज के हितों की सुरक्षा के लिए उन्होंने बड़ी से बड़ी मुसीबत झेपी

हमारे सामने मेहताजी का जीवन के दो मुख्य पक्ष हैं, एक भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व और दूसरा स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री के रूप में। इन दोनों पक्षों अपना क्षेत्रों में ही मेहताजी की कर्मशीलता मुद्रा रही। भारत के स्वायत्त-आंदोलन को सफल बनाने में सफल बनाने में तो मेहताजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा ही है। स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण में भी कमठ और परिचयी मेहता का व्यक्तित्व बड़ा-बड़ा में अक्षता है। प्रत्येक क्षण उन्होंने भारत को उन्नत विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने में व्यय किया है। वे भारत को आधुनिक रूप

बना चाहते थे जिसकी आधारसिद्धा विज्ञान थी। उन्होंने देश की
 मूल प्रजातियों को वैज्ञानिक ढंग पर चलाया भी और आध्यात्मिक
 फलदा प्राप्त की। उनकी कर्मशीलता के कारण ही भारत में उद्योगों
 का विकास हुआ है, असंख्य नये कारखाने लगे हैं अनेकों बांध बने हैं
 विचार-साधनों का बेसह्यायी जाल फैला है। धर्मित सिंघाई और परि
 तहन के आधुनिकतम संसाधनों का विकास हुआ है, औद्योगिक उत्पा
 दन में वृद्धि हुई है। शिक्षा और स्वास्थ्य-रक्षा के व्यापक
 स्तर से समाज-कल्याण एवं सुधार के अनेक सुन हाथ लगे हैं जनता
 का जीवन-स्तर उन्नत हुआ है। राष्ट्रीय भाव में वृद्धि हुई है सांस्कृतिक
 चेतना का सुधार हुआ है। एक सुषुप्त एवं सबल धर्म-व्यवस्था की नींव
 रखी गई है। कृषि में सुदृढावस्था एवं सामूहिकता का प्रचलन हुआ है,
 कृषि का उत्पादन बढ़ा है। देशांतरों की रूप-रेखा बदल रही है तथा
 साम्यजीवन तीव्र गति से आधुनिकता के सम्पर्क में आ रहा है—
 अर्थात् ऐकनयोन्य योजनाओं के अन्तर्गत एक नवीन भारत का जन्म
 हो रहा है—और इस सबका श्रेय राष्ट्रनिर्माता श्री नेहरू को ही
 जाता है। अपने कल्पनाशोक में भारत का जो चित्र उन्होंने देखा था
 अपने कर्म एवं अनवरत परिश्रम से उसे सही कर दिखाया तथा हमें
 आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की है।

विचारक एवं दार्शनिक के रूप में

श्री नेहरू एक महान विचारक चिंतक और दार्शनिक के रूप में
 वैश्वव्यापक स्थापति अर्जित करते रहे हैं। उनका विचार-क्षेत्र बहुत
 विस्तृत एवं व्यापक था। अपने जीवन में उन्होंने केवल भारत या
 भारत की समस्याओं का गहन चिन्तन ही नहीं किया बल्कि समूचे
 विश्व एवं विश्व की प्रायः सभी महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार
 और चिन्तन उनकी परिधि में आ जाता है।

काव्यनिरुद्ध मेहरू

मेहरू जहाँ अपनी वास्तविक दुनिया में बसते थे वहाँ से बहुत दूर कल्पना-लोक में भी बिखरते थे। वे सिर्फ अपनी वास्तविक दुनिया के महीन इंसानी भिन्न समस्याओं और परिस्थितियों विषय में ही नहीं सोचते थे बल्कि उनका विचार-शक्ति प्रायः कभी-कभी विषयों पर भी केन्द्रित हो जाती थी। उन्होंने अपने छात्रों मापकों एवं बालकों द्वारा सुसहित विचारों को व्यक्त किया है। उन्हें सुन देना तथा परस्पर मान इसी भिन्न पर परंपरा सक्त है कि वे एक महान विचारक और वास्तविक भी थे। बर कुमार बट्टोपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'मेहरू का व्यक्तित्व' में लिखा वही लिखा है 'उन्हें (मीनेहरू को) पारलौकिक और मृत्यु कल्पित परिस्थितियों में कोई विशेष अधिकार नहीं है। उनके दिमन लोक की वास्तविक समस्याएं और आवश्यकताएं ही ध्यान में और हम निकालने को कांछी हैं इस चोखाने की ध्वनि उन विचारधर्मिता में बराबर गुनाई पड़ती है। हम दृष्टि से हम नैतिक को सामान्यतः एक अकारणवादी या 'व्यवहारिकतावादी' विचार कह सकते हैं।"

समाजवाद

दार्शनिक मेहरूजी ने भारत को 'समाजवाद' का तारा दिया है। इतिहास में 'समाजवाद' के भिन्न-भिन्न अर्थ लगाए जाते रहे हैं। इस अर्थों द्वारा अर्थ प्राप्त हैं, किन्तु भी मेहरू की दृष्टि में विचारों में समाजवाद का अर्थ की रूपरेखा हमारी ही थी। वे समाजवाद का अर्थ समझते थे "अच्छा जीवन ! ध्वनि को उन्नति का समान अर्थ मिलना चाहिए, भौतिक अर्थों में प्रत्येक व्यक्ति को धन, कपड़ा, भोजन, स्वास्थ्य तथा और पिछा की सुविधाएं तथा मानसिक और सांस्कृतिक गंनुनि के साधन मुलभ होने चाहिए। यदि सिद्धांत

राजनीतिक या सामाजिक व्यवस्था बनना कोई संस्था-विशेष इन
: अनन्तम आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक हो तो उस व्यवस्था या
बा का उन्मूलन होना चाहिए।

उन्होंने ही 'समाजवाद' की इस विचारधारा को जन्म दिया
ता अपने जीवन के अंतिम वर्षों तक इसने पाबन्द रहे। संसार से
दा लेने के कुछ ही दिन पूर्व उन्होंने कहा था कि 'समाजवाद' ही
: रत के लिए एक उपयुक्त 'बाद' है। सम्भव है, इस दुनिया में मैं
धिक समय तक नहीं रहूँ इसलिए देव की सत्ता एवं जनता से मेरा
हूँ बाधक है कि 'समाजवाद' की नीति का परिष्कार न किया जाए।
: तसलिए कि इसके बिना हमारा अस्तित्व नष्ट हो जाएगा।

मार्क्स एवं गांधी का प्रभाव

मेहताजी के राजनीतिक दर्शन पर विचार किया जाए तो ऐसा
मगता है कि वे मार्क्स एवं महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित हैं,
तथा मार्क्सवाद और गांधीवाद में से जो बातें उन्हें वैज्ञानिक सही
: और पूर्व लयी हैं उन्हें ग्रहण कर उन्होंने 'मेहता-दर्शन' की शोख की
: नीतिक जीवन का सिद्धांत मार्क्स से एवं राजनीति गांधीजी से
: हन की है। मेहता इन सभी बातों से ऊपर उठकर अंत में व्यक्ति
: रचना व्यक्तिवाद की ही महत्त्व देते हैं, जिसमें व्यक्ति का उभयपक्ष
: सामाजिक एवं राष्ट्रीय वास्तवों को विकसित बनाता है।

राष्ट्रवाद

मेहताजी राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय शिष्टों के सबसे बड़े समर्थक एवं
: पक्षधर थे। भारतीय साम्यवाधियों के प्रति उनकी नापसंदी का
: भाव कारण यह था कि वे (साम्यवादी) राष्ट्रीयता के विरोधी
: । इस बात की मेहताजी स्वयं स्वीकार करते हैं, "मैं साम्यवाद
: विरोधी नहीं मैं समाजवाद का विरोधी नहीं। बात केवल इतनी
: कि मैं भारत का पक्षधर हूँ भारत के लोगों का पक्षधर हूँ।"

मेहरूजी में राष्ट्रीयता बूट-बूटकर मरी थी। जब भी उन्होंने ५५
 पाव का महित होते देखा वे उठकर चढ़े हो गए तथा नि ११
 राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा की। राष्ट्र का हित ही उनके लिए सब
 कुछ था।

मेहरूजी ने जिस राष्ट्रवाद की बात कही थी, वह केवल बड़े
 देश भारत के हितों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उनका राष्ट्र
 बार समूचे ससार तथा मानवता के लिए भावर एवं भ्रष्टा व्यव-
 करने का एक सामन था। इसमें किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं था
 लोकतंत्र

लोकतंत्रीय प्रणाली पर मेहरूजी की पूर्ण विश्वास था। इसका
 सत्यता उन्होंने बार-बार किया है। इसी कारण प्रायः उन्हें 'लोक-
 तंत्रीय समाजवादी' कहा जाता रहा है। इस विषय में उनके विचार
 बहुत ही स्पष्ट एवं सुसज्ज हुए हैं। उनका कथन है कि लोकतंत्र एक
 जीवन-मंडति है, सोचने का एक ढंग है परिस्थितियों से निपटने का
 एक तरीका है और उन बातों को सहन करने का जिन्हें हम पसंद
 नहीं करते। वे किसी भी हानि में लोकतंत्र की बचहसना नहीं
 चाहते थे। लोकतंत्र में उनका इतना विश्वास था कि वे इसके पूर्ण
 समर्थन के बिना किसी भी संस्थे को सही ठीर पर मार्ग नहीं
 समझते थे। वे लोकतंत्रीय प्रणाली के सम्मान के लिए अधिक।
 अधिक लोगों को साथ लेकर 'जाये बढ़ना चाहते थे। लोकतंत्र में
 निहित ही वे समाजवाद एवं राष्ट्रवाद को मानते थे

'यदि लोकतंत्र बना रहता है तो ये सब कुछ उसके अतिरिक्त
 परिणामों के रूप में स्वतः ही उपसर्ग हो जाना चाहिए, बिना
 सबसे बड़ी उपस्थिति है स्वयं लोकतंत्र की सम्पन्नता। और लोकतंत्र
 की सम्पन्नता ही 'सुखी जीवन' का मार्ग है। इसे समाजवाद कहि-
 ना कोई और 'बाद' सिद्धि आधारभूत रूप में यह लोकतंत्र ही है

यदि यह कहा जाए कि श्री नेहरू का 'धर्म' नाम से ही पिढ़ भी तो मन्थवा न होया। वे स्वयं किसी प्रयायत या रुढ़िवादी धर्म के अनुयायी नहीं थे और न ही इन बातों में उनका विश्वास था। इन बातों के अनुसार वे न केवल किसी रुढ़ धर्म में विश्वास नहीं रखते बल्कि व्यापक अर्थों में धर्म के इस आधारभूत सिद्धांत को भी नहीं मानते कि बुद्धि से परे जो वस्तुएं हैं, उन्हें बिना समझे और गरखे स्वीकार किया जा सकता है, अथवा किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नेहरूजी का दृष्टिकोण धर्म के विषय में भी वैज्ञानिक एवं तार्किक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जैसा कि बार-बार हम उल्लेख कर चुके हैं कि श्री नेहरू विज्ञान पर बहुत हद तक विद्वस्त आस्थावान एवं निर्भर थे। वे सदैव आधुनिक विज्ञान की ओर सम्मुख रहे तथा सदैव उन्हें यह माना बनी रही कि 'बह (विज्ञान) सृष्टि की अन्य समस्याओं की तरह जीवन की इस आधारभूत दार्शनिक समस्या को भी अपनी अनुसन्धान-परिधि में स्थान देया कि आसिर, प्रकट में इस सारी अनादि अनंत प्रक्रिया का कोई अर्थ भी है या नहीं और यदि है तो वह क्या है ?'

निष्कर्ष यह कि जीवन के प्रत्येक दृष्टिकोण में श्री नेहरू को वैज्ञानिक परम्पराएं रुचिकर लगती थीं। उनके विचार विन्तन एवं दायनिकता में विज्ञान ही मुख्य रूप से प्रयुक्त है तथा उनके सोचने, समझने अथवा करने का ढंग वैज्ञानिक ही होता था यदि संक्षिप्त पन्नों में उन्हें 'वैज्ञानिक चिंतक' अथवा 'दार्शनिक' कहा जाए, तो यह बिल्कुल सही होगा।

जमन का देवता

श्री नेहरू सही जमीन में जमन (शांति) के देवता ही थे। उन की यह हार्दिक इच्छा थी कि विश्व में शांति बनी रहे और वे निरन्तर इसके लिए प्रयत्नशील रहें। उन्हें अपने इस उद्देश्य में आत्म-बिक्रम उत्पन्नता भी प्राप्त हुई। संसार की परस्पर विरोधी शक्तों की लड़ाई जमनीका और वज्र की शांति-संवेदन लेकर एक-दूसरे के निकट आनेवाले नेहरूजी ही थे। विश्व में युद्ध की सम्भावना कम करने में श्री उनका महत्वपूर्ण भाग रहा है। श्री नेहरू ने निर्धन भारत और भारत की जनता के लिए ही नहीं मोठा बलि उन्हें सारे संसार की पिता थी। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय विषय या समस्या पर सन्सार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ श्री नेहरू की ओर देखा करते थे यह सब उनकी विदेश नीति के कारण ही था।

श्री नेहरू का कहना था कि भारत की अपने घाताग्रिया के पिछड़ेपन और दुर्बला से मुक्त होने के लिए सबसे अधिक आवश्यक कृता आंतरिक एवं विश्वशांति की है, क्योंकि प्रस्तुत समय में किसी भी राष्ट्र की शांति विश्वशांति से पृथक् नहीं की जा सकती। यदि विश्वशांति की स्थापना न हो तो इसका परिणाम होगा युद्ध सामान्य युद्ध नहीं बल्कि हिंसा और मारी मानव-जाति का अंत। नेहरूजी इसीलिए, शांति द्वारा एक समुन्नत विश्व की स्थापना की कल्पना करते थे। वे आधुनिक (अनु) धर्म (ऐनामिक एनर्जी) को युद्ध के लिए नहीं बल्कि वैज्ञानिक आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न के लिए प्रयोग करने की सलाह देते थे। विश्व की इन महत्त्वपूर्ण शक्तियों में नेहरू गर्व अपनी भूमिका निभाते रहे हैं तथा सर्वत्र अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण का बल बने रहे हैं। शांति की स्थापना ही उनके जीवन का मुख्य ध्येय था तथा उनकी विदेश-नीति में भी

इसी ध्येय की पूर्ति के प्रयत्न से। एक माध्यम में उन्होंने कहा।

“हम विश्वशांति की राह में हर सम्भाव्य प्रयत्न में
सकस्य हैं। वरत, यही हमारी विदेश नीति है।

हमारी विदेश नीति के सहस्रस्य हैं, विश्वशांति को बनाए रखना
एक मानवीय स्वतंत्रता को विस्तार देना।”

नेहरूजी की शांतिप्रियता के विषय में बंशंतकुमार बहुलाभ्यास
लिखा है, “नेहरू शांतिवादी हैं। सब तो यह है कि मान सम्पुन
त्व में नेहरू अकथे राष्ट्रात्मक हैं। जिनकी विश्व-दृष्टि बन्धुत
तामिक दुःखमुक्त और व्यावहारिक है तथा अन्य अनेक देशों
प्रमुख को इस दृष्टिकोण के समर्थक हैं। वास्तव में जहाँके पर
वर्तों पर चर रहे हैं। नेहरू द्वारा निरूपित मार्ग की शुद्धता पर
लेक राष्ट्रों के मतेष्व से ही शांतिपूर्ण सहवस्तित्व और अस्वाप्त
गरी महोपेय के उन पाँच सिद्धान्तों का उद्भव हुआ है, जो ‘पंच
शील’ के नाम से प्रसिद्ध हैं।”

मान विश्व दो बड़े भूटों में विभाजित है—अमरीका और रूस।
एक दूसरे के विरोधी होने के नाते दोनों भूटों द्वारा यह प्रयास रखा
है कि वे संश्रयन या दूसरे जगहों द्वारा संसार के अन्य देशों को
अपने भूट में शामिल कर दें। पर भारत एक ऐसा देश है जो किसी
भी भूट में सम्मिलित नहीं हुआ। नेहरूजी ने देश को ‘तटस्थता’ की
नीति पर बनाया एवं इसपर सबकुछी से कायम रहे। तटस्थता की
इस नीति का मूल मंत्र यह है कि विश्वशांति को बनाए रखन क
लिए, बिना किसी अन्य भूट में सम्मिलित हुए, निरंतर प्रयास जारी
रखे जाएं तथा सभी देशों की स्वतंत्रता का समर्थन दिया जाए।
नेहरूजी की तटस्थता की इस नीति ने विश्व-रामेय पर भारत
को भारर एवं सम्मान का स्थान दिया है। शांति-स्थापना के अपने
उद्देश के निमित्त नेहरूजी के २०—

मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज से ऊँचाई पर से
बिखेर दिया जाए—उम सितों पर जहाँ भारत के किसान पं
कण्डे हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसीका
बन जाए ।

सूक्तिया

अंतिम कसौटी

अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें बनाने की आदत आज लेना आसान है लेकिन हम जानते हैं कि कभी-कभी बड़े उत्तम सब्ब निकृष्टतम व्यक्तियों की जवान पर बड़ आते हैं और उनका कुछ भी अर्थ नहीं होता। हम बेधमक्ति और उपद्रुम की बर्बाद करते हैं और बहुधा तबाहपित देशभक्त नीचतापूर्ण कार्यों में भाग लेते हैं। इसलिए इस बात का कुछ अधिक महत्त्व नहीं है कि मैं कितनी सुन्दर भाषा का प्रयोग करता हूँ। अंतिम कसौटी कर्म है।

(संसद् में भाषण, १९५१)

अक्सर की समानता

लोकतन्त्र-सम्बन्धी उद्घोषणाएँ आताम्बी की आदत आती यह कि प्रत्येक व्यक्ति का एक बोट है, उन दिनों के लिए ठीक और काफी भी लेकिन यह अप्रुब है और सोय आज अधिन विस्तृत और अधिक सम्मीर लोकतन्त्र के जर्नों में सोचने लगे हैं। बाकिर एक बोटवाले मित्रपति और एक बोटवाले लक्षपति के बीच क्या समानता हो सकती है ? लक्षपति के पास अपना प्रमाण आने के सैकड़ों उपाय हैं, जिनसे अंगार सूर्यवा अंधित हैं। इसी प्रकार अतिविधित व्यक्ति और विस्तृत अधिलित व्यक्ति के बीच भी कोई समानता नहीं है।

यह शिक्षा आर्थिक समता और दूसरी बातों में लोगों के बीच में
 अंतर है। लोगों में, मैं समझता हूँ किसी रूप तक तो भेद रहेगा है
 सब लोग योग्यता एवं समता में समान नहीं हो सकते। बेरि
 सारी बात का तात्पर्य यह है कि लोगों को 'अवसर की समानता' प्राप्त
 होनी चाहिए, यानी यह कि उन्हें आगे बढ़ने का मौका मिल
 चाहिए, जहाँ तक भी वे बढ़ सकें।

(संविधान तथा मैं, भा. १, १९५०)

आत्मनिर्भरता

किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय में किसीपर निर्भर रहना ठीक
 नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा एकाकी करनी है। दूसरों
 पर निर्भर रहना निपटारा को आश्रित करना है।

(‘आत्मनिर्भर’)

आत्मा

प्रधानतः मुझे इस दुनिया से विनम्रता है और इस (मौलिक)
 जीवन से किसी दूसरी दुनिया या सम्भावित भावी जीवन के नहीं।
 आत्मा जैसी कोई वस्तु है या नहीं और मृत्यु के बाद स्थिति का
 कोई अस्तित्व रहता है या नहीं यह मैं नहीं जानता। और यहाँ
 मैं प्रश्न अपनी व्यवस्था पर महत्त्वपूर्ण है। परन्तु मुझे यह विन्दुन
 उद्दिष्ट नहीं करते। जिस वातावरण में मैं पला-बढ़ा हूँ उसमें बाधा
 को, एक भागी जीवन को, कर्म-सिद्धांत को और पुनर्जन्म को बल
 काय के रूप में स्वीकार किया जाता है। मैं भी इससे प्रभावित
 हूँ। इसलिए एक प्रकार से मैं इन पूर्वाग्रहों के प्रति सहानुभूति
 रखता हूँ।

हो सकता है कि आत्मा जैसी कोई वस्तु हो जो स्पष्ट पठारी

विश्वतन हमारे सामाजिक संयुक्त और हमारे बौद्धिक विकास पर पड़ा है। नेहरू के सक्रिय और सामूहिक नेतृत्व के बिना भारत के स्वयं का विश्वतन समय-समय असम्भव-सा लगता है। हमारे देश के इतिहास का एक युग समाप्त हो गया है।

प्रधान मंत्री साहय्यहापुर शास्त्री

नेहरूजी के निधन से केवल भारत की ही नहीं समूची मानवता की छवि हुई है। वे नये भारत के निर्माता भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रतीक विश्वशांति के अग्रदूत एक मानवता के हितों के प्रहरी थे। उन्होंने हमें नई रीतनी दी है, नये संकल प्रणाल किए हैं। एक युग का निर्माण उन्होंने किया है, और इस युग पर, इस युग के इतिहास पर, उनका नाम अमिट हस्ताक्षर है।

श्री भिनोबा भावे

संसार में मानवता का एक महान पुत्राति, और हमारे देश में एक अग्रणीय नेता हो गया। मैंने ऐसा कुछय राजनीतिज्ञ नहीं देखा जो बुद्धा और कुर्बाना से मुक्त हो।

भारतीय संस्कृति की इस तीन प्रमुख प्रतिमाओं—बुद्ध, पांडी और नेहरू—को समस्त मानवता सम्पूर्ण एक अपनी महान-बलियों से पूजती होगी।

स्वर्गीय श्री कर्मेजी

मैंने अपने जीवन में कितन ही व्यक्तियों से प्रेरणा प्राप्त की है और श्री नेहरू विशेष रूप से मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उनका आशयवाद से ता मैं आत्मिक प्रभावित हुआ हूँ। उनका आदर्शवाद अतीत आकाश में ऊर्ध्वगति का प्राप्त होनेवाला आशयवाद है। मैंने

उनके जीवन-काल का गहन अध्ययन किया है तथा जीवन में इसकी सार्थकता का महत्त्व पहचाना है। नेहरू इस युग के एक महान राज नीतिज्ञ हैं।

सोवियत प्रधान मंत्री श्री स्टालिन

‘न केवल भारतीयों ने एक तपा हुआ समझदार नेता को बिना है—बल्कि नेता जिसने देश की आशाओं के लिए सझाई सझी और अपने राष्ट्र के पुनर्जन्म के लिए संघर्ष किया—बल्कि तमाम प्रगतिशील लोगों को ऐसे व्यक्ति के जीवन पर शोक होना जिसने अन्तिम क्षण तक भी मानवता के उच्च आदर्श तथा शांति एवं प्रगति की सवा करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

जवाहरलाल का सबसे बड़ा स्मारक यही होना कि मानवता-वाद सामाजिक प्रगति और शांति के उन महान सिद्धांतों की विजय है। उनके लिए उन्होंने अपना महान जीवन अर्पण किया।

अमरीकी राष्ट्रपति जॉनसन

नेहरूजी के नेतृत्व ने दुनिया को स्थायी शांति के माप पर जलाया। उनके अविज्ञान ने उनके देश और सारी मानवता को निर्भय बना दिया।

इन नायक बहियों में उनका नेतृत्व तथा समझदारी अपरिहार्य थी और भारत के स्वतंत्रता के महान अभियान के प्रति उनकी लगन बढ़ती थी।

इतिहास यह भी सिद्धेगा कि उनके नेतृत्व में दुनिया ने स्थायी शांति की ओर बढ़ना शुरू किया।

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो

भारतीय जनता की महान कति हुई है। यह कति इस समय बहुत यथोचित है क्योंकि आज हमका योगदान बहुत ही महत्व रखता। तटस्थ राष्ट्रों, उन्मत्तियों राष्ट्रों और व्यापक रूप से समस्त विश्व ने यति का एक महान बोधा को दिया है।

मलयेसिया के प्रधान मंत्री टुंकु अब्दुल रहमान

ये हमारी प्रेरणा के स्रोत थे। उनके निष्ठा से एशिया ने अपना सबसे बड़ा नेता इतिहास को सौंप दिया है। विश्व के अपने युग के सबसे महान नेताओं में एक का खो दिया है।

(जन०) नासिर

महत्वा मित्र की जनता के, उसकी आकांक्षाओं के अनुसार होता है। ये केवल भारत की ही नहीं समस्त मानवता की रोशनी है।

फिलिपीन के राष्ट्रपति मैकापमाल

भारत की मार्गदर्शक प्रेरित बुद्धि वाले के फिलिपीन की जनता बुद्धि है लेकिन महत्वा का साथ सब एक कारण रहेगा, जब तक दुनिया में ऐसे लोग हैं जो यति का स्वप्न देखते हैं और यति पर बुद्धि और विवेक की अपरिहार्य विमर्श में विश्वास करते हैं।

मौलाना आजाद

महत्वा का स्वभाव ऐसा है कि यदि वे किसी एक विचार से प्रभावित हो जाते हैं तो बिना किसी दुर्लभ-विचार के उसे प्रभाव

करते हैं, किन्तु बाह में यदि उन्हें पता चल जाता है कि उन्होंने गसती की है तो उसे स्वीकार करने में वे कभी नहीं हिचकते ।

श्री राजगोपालाचारी

किस प्रकार महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने अर्जुन का रथ हाँका था उसे आधुनी प्रवृत्तियों पर विजय करने में समर्थ बनाया था उसी प्रकार आज हमारा जबावर राष्ट्र का रथ को समृद्धि की ओर सफलतापूर्वक ले जा रहा है ।

आचार्य कृपलानी

मैंने दुनिया के इतिहास में एक डिप्टेटर प्रधान मंत्री को इतना मोहकप्रिय होते कभी नहीं देखा । वे बच्चों के लिए नेहरू चाचा हैं मुबतियों के लिए एक सुन्दर राजकुमार । वे विद्वानों के लिए महा पण्डित दार्शनिकों के बीच महान दार्शनिक विज्ञानवेत्ताओं के लिए कुशल वैज्ञानिक साहित्य और राजनीति में कुशल पण्डित हैं । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचता जहाँ पण्डितजी की धाक न हो ।

जार्ज बर्नार्ड शॉ

मुझे आश्चर्य है कि नेहरू सेवक और कवियों जैसा महानहृदय पाकर भी इतने बड़े राजनीतिज्ञ कैसे बन गए ।

श्रीमती रूजवेल्ट

मुझे श्री नेहरू छान्ति के केन्द्र मानूम पड़ते हैं । भले ही चारों ओर तूफान छूटा हो फिर भी नेहरू शांत और अनिचल रहनेवासे हैं । हमें उनके निरचल म्यायपीछा और बुद्धिमत्ता की तीव्र भाव स्पष्ट है ।

श्रीमती सगजिनी नायडू

पण्डितजी को हम मायाब कर सकते हैं बेहद दुखी कर सकते हैं। हो सकता है, वे मारने भी बीड़ें हमें किन्तु हमसे धनुता हम नहीं म सकते। बेहद कमूस हैं वे धनुता देने में। अजीब संयमित आदमी हैं—कोई असर नहीं दुस्मनी का उनपर।

अमरीकी सीनेट की दृष्टि में

वे इस दुग के एक महान व्यक्ति ब। वे एक बिस्व-मेता ब जो छांति स्वतन्त्रता एवं लोकतन्त्र के पुजारी थे। वे एक महान भारतीय थे। उनका साध जीवन भारत के प्रति उत्सर्ग हुआ बा।

सत्तार पर बहुत ही कम व्यक्तियों ने इतना प्रभाव डाला है जितना कि नेहरूजी ने।

डीन रस्क

भारत की यह छाति सारे मानव-समाज की छाति है। प० जवाहरलाल नेहरू स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा ग्याब और छांति के मान्यों के जिन्हें हम भी स्वीकार करते हैं प्रतीक थे। उनके नेतृत्व और प्रेरणा बा अभाव हम सभी अनुमन करेंगे।

एडवार्ड स्टीवेन्सन

प्रधानमंत्री नेहरू के दुबड़ पटीर के भीतर स्वतन्त्रता ग्याब और आत्मा की बीगबिलाए प्रज्जसित थी। यह समय उनके देश और समस्त बिब के लिए अत्यन्त मायूक है। इन मायूक पड़ी में हमने एक ऐसा महान मेता रो दिया है जिसके बिबेक की हमें सवन अधिक आश्चर्यकता थी।

प० जर्मनी के प्रधान डा० सुडविग

गांधीजी की मृत्यु के बाद भारतीय जनता को इससे बड़ी क्षति नहीं हुई। उन्होंने एक आधुनिक आधार पर एक नये राष्ट्र के विकास का एक सफल उदाहरण रखा।

जापान के प्रधानमंत्री हयातो इकेडा

विश्व और मानवता के लिए यह बड़े दुर्भाग्य का दिन है, महात्मा गांधी-नून एशिया के अवाहरसाज नेहरू को हमने खो दिया।

हिन्दी कवयित्री महादेवी वर्मा

श्री अवाहरसाज नेहरू का नाम बीसवीं शताब्दियों के इतिहास में उज्ज्वल पृष्ठों में लिखा जाएगा तथा वे इस शती के मोक्षदायकों में सर्वत्र प्रसिद्ध रहेंगे। नेहरूजी राजनीतिज्ञ वार्षनिक कवि भावुक एवं अग्रगण्य व्यक्ति थे। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी ही संसार में जाता है। वे अपने जीवन के अंत तक गरीब रहे, लक्ष्मण रहे। बिफ्ट से बिफ्ट परिस्थिति से झुझने के लिए सर्वत्र तैयार रहते थे और सब झुझते थे। उनमें भारत बीलता था। वे अवातराधु थे। उनका किसीके प्रति विराग नहीं था। वे विदेशवांछि तथा विश्व-कल्याण के लिए महा प्रयत्नशील रहे।

अग्रज श्रीमती पद्म शर्मा

सृष्टि मानवीय इतिहास की प्रत्येक शती में कुछ ऐसे महा-मानवों को जन्म देती है, जो मानवीय जीवन पर अपनी अनिट छाप छोड़ते हैं। अवाहरसाज नेहरू भी एक ऐसे ही महामानव थे।

नेहरूजी के मेलत्व में भारत गुरु और पश्चिम के बी-

श्रीमता सरोजिनी नायडू

पण्डितजी को हम नायब कर सकते हैं, बेहूष दुष्टी कर सकते हैं। हो सकता है, वे मारने भी दोड़ें हमें किन्तु उनसे शत्रुता हम नहीं से सकते। बेहूष कजूस हैं वे शत्रुता देने में। अजीब समझि आदमी हैं—कोई बखर नहीं बुद्धिमी का धनपर।

अमरीकी सीनेट की दृष्टि में

वे इस युग के एक महान व्यक्ति थे। वे एक विद्वान-नेता थे जो शांति स्वतंत्रता एवं लोकतन्त्र के पुजारी थे। वे एक महान भारतीय थे। उनका साध जीवन भारत के प्रति उत्सर्ग हुआ था।

संसार पर बहुत ही कम व्यक्तियों ने इतना प्रभाव डाला है, जितना कि मेहन्ती ने।

ठीन रस्क

भारत की यह क्षति सारे मानव-समाज की क्षति है। १० अवाहरक्षान मेहक स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा, श्वास और शांति के आह्वानों के बिना हम भी स्वीकार करते हैं प्रतीक थे। उनके नेतृत्व और प्रेरणा का अभाव हम सभी अनुभव करेंगे।

एदगार्ड स्टीनेम्सन

प्रभामर्मनी मेहक के दुर्बल शरीर के भीतर स्वतन्त्रता श्वास और आशा की दीपविलोप प्रज्वलित थीं। यह समय हमने देखा और समस्त विश्व के लिए अव्यक्त भावुक है। इस भावुक घड़ी में हमने एक ऐसा महान नेता खो दिया है, जिसके बिना हमें सबसे अधिक आश्चर्य होता था।

प० जर्मनी के प्रधान डा० सुडर

गांधीजी की मृत्यु के बाद नाज़ीन बन्ना का रुत रुके नहीं रुके। उन्होंने एक सामुहिक आंदोलन पर एक नए रुत के विकास का एक सफल उदाहरण रखा।

जापान के प्रधानमंत्री हयाता इमेडा

विश्व और मानवता के लिए यह बड़े दुःख का दिन है, मानवता के लिए एक बड़ा दुःख का दिन है।

हिन्दी कवयित्री महादेवी वर्मा

श्री महादेवी वर्मा का नाम बीमारी के दुःखों के दुःखों में उभरने के लिए पृथ्वी में लीला आया था। वे हम सभी के सामने हैं। मैं सब प्रसन्न हूँ। नेहरूजी राजनीतिज्ञ सामरिक कवि नाट्य एवं अग्रणी व्यक्ति हैं। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी ही मरता है। वे अपने जीवन के अंत तक मरने रहे, तब रहे। बिना किसी परिस्थिति के अपने लिए सब कुछ तैयार रखने के लिए मरने के लिए। उनमें भारत बीमता था। वे अजस्र मर रहे। उनका अन्तिम प्रति विरोध नहीं था। वे विश्वशांति तथा विश्व-कल्याण के लिए सदा प्रयत्नशील रहे।

अंग्रेजी सेलिका पर्स वम

सृष्टि मानवीय इतिहास की प्रत्येक घड़ी में कुछ नया मिला मानवों को जन्म देती है, जो मानवीय जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। महादेवी वर्मा भी एक ऐसे ही महामानव हैं।

नेहरूजी के मरण में भारत पूरा ही पश्चिम के बीच पड़

धुब का-सा काम करता रहा तब भारतीय जनता दोनों ओर से
जमसाधारण को समझती रही। इस नाबूक समय में भी नेहरू
ने भारत को ऐसा सुबुझ एवं सक्रियवासी लोकतंत्रीय देश बना दिया
है कि आनेवासी कई सदियों तक इसकी ये विशेषताएं बनी रहेंगी।

एक पत्रकार की दृष्टि में

मुझ जैसे जा रहे हैं, पर मुझ की बाबी तो नहीं। महारमा बन
गए, पर सत्य और अहिंसा का उनका संदेश तो नहीं—उत्तम बन
गए, पर सेवा और नम्रता का उनका संदेश तो नहीं—सुभाष बन
गए, पर आजाद हिन्द फौज का संदेश तो नहीं—पटेल बन गए, पर भारतीय
असह्यता का उनका संदेश तो नहीं—और आज नेहरू भी जा रहे गए,
पर अनिश्चयता और विश्व-शांति का उनका संदेश तो नहीं।

० ० ०

